











# दुनिया में चर्चा

आज पूरी दुनिया में चंद्रयान-3 की सफलता चर्चा में है, तो कोई आश्वर्य नहीं। प्रतिक्रियाओं पर गौर करने से साफ पता चल जाता है कि कौन खुश है और कौन नाखुश। वैसे, दुनिया के ज्यादातर लोग आज खुश हैं कि इंसान का बनाया एक यान चंद्र पर एक दुर्लभ जगह पहली बार उतरा है। अंतरिक्ष विज्ञान में सफलतम देश अमेरिका में भारत की तारीफ हो रही है। जो अमेरिकी अखबार कभी भारत के अंतरिक्ष अधियानों का मजाक उड़ाया करते थे, वे भी तारीफों के पुल बांधते दिख रहे हैं। ये अखबार शायद अब भारत को देखने की अपनी इष्टि में बदलाव लाने के लिए प्रेरित होंगे। कोई शक नहीं, अमेरिकी नेताओं ने खुलकर खुशी का इजहार किया है। रूस के राष्ट्रपति पुतिन की भी बधाई खास मायने रखती है। रूसी विमान लूना-25 दुर्भाग्य से अभी पांच दिन पहले ही नाकाम हुआ है, उसके बावजूद पुतिन ने आगे बढ़कर बधाई दी है। भारत कुछ पल के लिए ही सही, अपने मित्र देश रूस के राष्ट्राध्यक्ष का ध्यान युद्ध से हटाने में कामयाब हुआ है। किसी चीनी नेता से बयान की उम्मीद नहीं थी और चीनी अखबार भी खामोशी ओढ़े बैठे हैं, तो उनकी मजबूरी को समझा जा सकता है। दूसरी ओर, पाकिस्तान में खुशी जता रहे लोगों और अखबारों पर अनायास ध्यान जाता है। पाकिस्तान ने हमसे आठ साल पहले अपनी अंतरिक्ष विज्ञान एजेंसी सुपार्कों की स्थापना की थी, पर वह संकीर्णता और मजहबी कटृता की सेवा में लगकर पिछड़ गया। अब भारत की हो रही प्रशंसा से भी पाकिस्तान को सकारात्मक प्रेरणा लेनी चाहिए। मानवीय वैज्ञानिक विकास में ही दक्षिण एशिया और दुनिया की खूबसूरती है। दुनिया की सर्वश्रेष्ठ अंतरिक्ष विज्ञान संस्था नासा की प्रतिक्रिया भी यादगार है। नासा के प्रमुख ने खुलकर खुशी व गर्व का इजहार किया है। स्पष्ट है कि आने वाले दिन इसरो और नासा के बीच सहयोग के होंगे। सबसे बड़ी बात कि भारत ने दुनिया को सकारात्मक सोच का अवसर दिया है। सकारात्मक इष्टि रखने वाले अरब देशों में भी खुशी की लहर है। विशेष रूप से चंद्र अधियान के लिए प्रयासरत संयुक्त अरब अमीरात की खुशी दर्ज करने लायक है। ऐसे बहुत देश हैं, जो भारत के साथ अंतरिक्ष के मोर्चे पर सहयोग बढ़ाएंगे, पर स्वयं अपने देश में क्या प्रतिक्रिया है? बहुत से नेताओं को चंद्रयान के विषय में सही सूचना नहीं थी, अतः गलत या अनुचित प्रतिक्रियाएं भी आई हैं। कुल मिलाकर, देश में विज्ञान के लिए बहतर व व्यापक माहौल बनाने की जरूरत फिर सामने आई है, जिस पर सभी को गौर करना चाहिए। हमारे लिए चंद्रयान-3 की सफलता गहरी भावुकता का अवसर भी है। हमारे देश ने अतीत में कितना और क्या-क्या झोला है? कोई भी बड़ी सफलता पीछे पलटकर विफलताओं की भी याद दिलाती है। गौर कीजिए, बीबीसी के एक एंकर का पुराना सवाल फिर चर्चा में आ गया कि क्या भारत को अंतरिक्ष कार्यक्रम पर इतना पैसा खर्च करने की जरूरत है? मतलब, जिस देश में गरीब भी रहते हों, क्या उसे वैज्ञानिक विकास पर ध्यान नहीं देना चाहिए?

## पाक में खत्म होते अल्पसंख्यक

विश्व में कई प्रगतशाली दशा अपने समाज में विवर्धता आ से भर धार्मिक एवं सांस्कृतिक विचारों का सम्मान करते हैं तथा सभी पंथों

अथ ग्रामपाल हुआ। उनका राजा चन्द्रसेन सिंहलद्वीप के शासक थे। उन्होंने अपनी बेटी पद्मिनी के विवाह के लिये स्वयंवर का आयोजन किया। यह समाचार पूरे भारत में आया। चित्तौड़ के राजा रत्न सिंह भी स्वयंवर में भाग लेने सिंहलद्वीप पहुंचे। वहां पद्मिनी से विवाह के इच्छुक राजाओं की बल बुद्धि और कौशल की परीक्षा के लिये बन में आयेंट की एक सर्प्ता आयोजित की गई। जो राजा रत्न सिंह ने जीती और राजकुमारी पद्मिनी से उनका विवाह हुआ। राजकुमारी पद्मिनी महारानी पद्मावती बनकर चित्तौड़ आ गई। उनके रूप गुण और राजा रत्नसिंह के कौशल की चर्चा दूर-दूर तक हुई। यह दिल्ली के शासक अलाउद्दीन खिलजी ने उनका उपाय किया। दिल्ली सल्तनत के दो हमले चित्तौड़ पर हो चुके थे पर सफलता नहीं मिली थी। बल्कि गुजरात जाती दिल्ली सल्तनत की फौज से अपने क्षेत्र से होकर निकलने के लिए कर भी बसूला था। किन्तु गागरैन की सहायता के लिये चित्तौड़ की सेना गई थी जिससे शक्ति में कुछ गिरावट आई और दिल्ली ने तोपखाने की बृद्धि कर अपनी शक्ति बढ़ा ली थी। स्थिति का आकलन करके दिल्ली की फौजों ने चित्तौड़ पर हमला बोला। लगभग एक माह तक घेरा पड़ा रहा। किन्तु सफलता नहीं मिली। अंततः अलाउद्दीन खिलजी ने एक कुटिल चाल चली। कुछ भेंट के साथ समझौता प्रस्ताव भेजा और जाह्र हुए। राजा ने एक साथ सभासदों का आमंत्रण किया। किसी को अपने प्राणों का मोहन था बस राजा को मुक्त कराने का संकल्प था। इन सभी का बलिदान हो गया पर राजा मुक्त होकर सुरक्षित किले में पहुंच गए। यह 22 अगस्त, 1303 का दिन था। राजा मुक्त होकर किले में आ तो गये थे। पर किले में राशन और सैन्य शक्ति दोनों का संकट था। सेना के अधिकांश प्रमुख सरदार राजा को मुक्त कराने की छापामार लड़ाई में बलिदान हो गये थे। इस घटना से बौखलाए अलाउद्दीन खिलजी का तोपखाना गरजने लगा। अंततः रानी द्वारा जौहर और राजा रत्नसिंह द्वारा शाका करने का निर्णय हुआ। 25 अगस्त, 1303 से जौहर की तैयारी आरंभ होती जारी की गयी तरह राजा ने राजा की रचना ह्याख्जाईन-उल-फुतहून (तारीखे अलाई) में मिलता है। इस विवरण के अनुसार खिलजी की फौज ने एक ही दिन में लगभग 30,000 लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने बेटे खिज्र ख्वाजा को चित्तौड़ का शासक नियुक्त किया और चित्तौड़ नाम दिया था। रानी पद्मावती का जौहर स्थल आज भी चित्तौड़ में स्थित है। वहां लोग जाते हैं। शृङ्खला से शीशी झुकाते हैं तथा रानी को सती देवी मानकर अपनी इच्छापूर्ति की प्रार्थना करते हैं।

# 'ਕੁਦੁ' ਧਾਨ-3... ਅਥ ਸ਼ਾਹ ਹੋ ਮਹੀਨ

लगाकर फैसलाबाद में तमाम पिरजाघरों और ईसाइयों के घरों में तोड़-फोड़ और आगजनी की गई। ईसाइयों के खिलाफ भड़की हिंसा ने दिल दहला दिया। यह बहुत निराशाजनक है कि पाकिस्तान में ईशनिंदा के जूठे आरोपों के कारण निर्दोष अल्पसंख्यकों को उत्पीड़न का समना करना पड़ता है और कभी-कभी तो उनकी जान भी ले ली जाती है। दशकों से हम यह देख रहे हैं कि पाकिस्तान में उग्र भीड़ का नून व्यवस्था की धज्जियां उड़ाते हुए ईशनिंदा के आरोपित व्यक्ति अथवा समुदाय को खुद ही निशाना बनाने में जुट जाती है। आसिया बीबी (आसिया नोरेन) का मामला ऐसे मामलों का सबसे चर्चित प्रकरण रहा। ईसाई महिला आसिया बीबी को न केवल जेल जाने के साथ कष्टमय जीवन जीना पड़ा, बल्कि उनके समर्थन में आए एक नेता सलमान तासीर की हत्या कर दी गई और वह भी उनके सुरक्षाकर्मी द्वारा। सलमान तासीर के हत्यारे को जब फांसी दी गई तो उसके जनाजे में हजारों लोग उमड़े। पाकिस्तान में ईशनिंदा के आरोप में अल्पसंख्यकों को सताने के हाल में सैकड़ों मामले आए हैं। ईशनिंदा के आरोपों के बहाने वहां अल्पसंख्यकों का निरंतर दमन हो रहा है। सबसे ज्यादा निराशाजनक बात यह है कि पाकिस्तान सरकार इन घटनाओं की केवल निंदा करके अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेती है। इसका कारण यह है कि करीब 97 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाला यह देश अपने यहां के अल्पसंख्यकों को निचले दर्जे का नागरिक मानता है, अन्यथा वह कानून हाथ में लेने वालों को अवश्य ही कठोर दंड का भागीदार बनाता। वास्तव में इस्लामी सिद्धांतों की मनमानी व्याख्या ने इस गलत अवधारणा को बढ़ावा दिया है कि इस्लाम गैर-मुसलमानों के प्रति शत्रुता को बढ़ावा देता है। इस्लाम अन्य विचारधाराओं के प्रति शत्रुता की वकालत नहीं करता।

आधार पर चंद्रमा की गतिविधि के हिसाब से तैनाती का आदेश दिया है। साथ ही लोगों को भी इसी आधार पर सतर्क रहने की सलाह दी है।<sup>1</sup> चंद्रमा के प्रभाव की चर्चा पहले इस्लाम और चांद पर कर लें। रेडियो खबर के अनुसार यूपी के सभी विद्यालयों को निर्देश था कि चंद्रयान को छात्रों को दिखाया जाए। उनका ज्ञानवर्धन हो सके। इसमें करीब दस हजार मदरसा के तालिबे-इल्म भी शारीक थे। आम धारणा यह है कि इन मदरसों से ज्यादा ध्यान मजहबी शिक्षा को दी जाती है। अतः उन सबको चांद के भिन्न आकारों का भी सम्यक ज्ञान भी मिले। मसलन हिलाल अर्थात् धनुषाकार चंद्र। इस्लाम के अनुसार चंद्रमा को पैगंबर ने विभाजित किया था। इस पर भी अन्य नए सिलेबस में विस्तार से अध्ययन हो। हिंदू छात्रों को चंद्रयान पर खास विश्लेषण करना होगा। चंद्रयान ने नया आयाम ही जोड़ दिया। अर्थात् ग्रहण कब, कैसे और क्यों पड़ता है? इस पर अधिक अध्ययन हो। अब केवल चांद पर

झंडा गाड़ने अथवा झंडे पर चांद फहराने मात्र से अध्ययन खत्म नहीं होगा। पैटिंटों को तो खास कर तार्किकता सिद्ध करनी ही है कि चंद्रमा नहीं दिखता है (कृष्ण पक्ष)। अतः उस दौरान कोई भी शुभ कार्य करना उचित व्याप्ति नहीं होता है। दरअसल इसके पाँछे ज्योतिष में चंद्रमा की घटती हुई कलाएँ होती हैं। इसी भाषी शुक्ल पक्ष है जो अमावस्या और पूर्णिमा के दरम्यान आता है। चांद तब चमकने लगता है। पूर्णिमा के दिन बहुत बड़ा होता है। बलशाली होकर अपने पूरे आकार में रहता है। यही कारण है कि शुभ काम करने के लिए इस पक्ष को उपयुक्त माना जाता है। सनातनी हिन्दू तो प्रत्येक खगोलीय घटना का पौराणिक कारण खोज लेता है। जैसे कृष्ण और शुक्ल पक्ष व्याप्ति हैं ? एक कथा के अनुसार उन आदित्य वर्ग के देवता दक्ष प्रजापति के बारे में स्वयं पुराण में एक प्रसंग है। उनकी 27 बेटियां थीं। इन सभी का विवाह चंद्रमा से किया गया। ये वास्तव में 27 नक्षत्र

थी। चंद्रमा सभी में सबसे ज्यातों  
रोहिणी से प्रेम करते थे। बाकी सभी  
से हमेशा रुख्या व्यवहार करते थे।  
ऐसे में बाकी सभी ने चंद्रमा को  
शिकायत अपने पिता से की। राज-  
दक्ष ने चंद्रमा को डांटा और कहा  
कि सभी के साथ समान व्यवहार  
करें। इसके बाद भी चंद्रमा को  
रोहिणी के प्रति प्यार कम नहीं  
हुआ। इस बात को लेकर दद-  
प्रजापति उससे में आकर चंद्रमा को  
क्षय रोग का शाप दे देते हैं। इस  
शाप के चलते चंद्रमा का तेज धीरे  
धीरे मध्यम होता गया। तभी न  
कृष्ण पक्ष की शुरूआत मानी गई।  
दक्ष प्रजापति के शाप के कारण क्षय  
रोग से चंद्रमा का तेज कम होता  
गया और उनका अंत करीब आ  
लगा। तब चंद्रमा ने भगवान् शिव  
की आराधना की और शिवज  
प्रसन्न होकर चंद्रमा को अपन  
जटा में धारण कर लिया। शिवज  
के प्रताप से चंद्रमा का तेज फिर से  
लौटने लगा और उन्हें जीवनदा  
मिला। दक्ष के शाप को रोका नहीं  
जा सकता था। ऐसे में शाप से  
संशोधन करते हुए चंद्रमा को ह

लुटेरे अमावस्या की रात में वारदात का अंजाम देते हैं। पारदी गैंग भी हर डकैती के पूर्व देवालय जाते हैं मरिदों के निकट मुखबिरी ठीक से हो तो उन्हें पकड़ा जा सकता है। यह भी बड़े अपराधी, खासकर डकैतों तो बहुधा मुहूर्त देखकर काम करते हैं। एक खबर महाराष्ट्र से थी। पुणे जिले के बारामती में बदमाशों ने ज्योतिष सलाह के बाद एक करोड़ रुपये से अधिक की डकैती की भविष्यवक्ता रामचंद्र चावा से उन्होंने शुभ समय की सलाह ली थी। पुलिस ने ज्योतिषी समेत छह आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। अर्थात् ज्योतिष का दुतरफ उपयोग होता है। पुलिस भी यही पारंगत होती तो कामयाब हो सकती है। डीजीपी विजय कुमार इंजीनियर (सिविल बी-टेक) ज्ञानी हैं। अत उनसे अपेक्षा है कि वैज्ञानिक आधार पर वे ज्योतिष का प्रयोग करेंगे। फिलवक्त चंद्रमा पर ही सम्पूर्ण आस्था नहीं रख सकते जैसे कवि विलियम शेक्सपियर ने जूलियट से रोमियो को कहलवाया था- 'चांद की कसम मत खाओ।'

# वैश्वीकरण और 21वीं सदी का भारत

सच के हक में... 

ਏਥੇ ਮੈਂ ਰਾਖ੍ਯਪਾਤਾ ਕਰਾਰਾਨਾ ਸਕਲਾਰਾਪਾਲੂ ਸੋ ਮਿਲਕਰ  
ਖੁਸ਼ੀ ਹੁੰਦੀ। ਹਮਨੇ ਕਈ ਮਹੌਂ ਪਰ ਚੰਗਾ ਕੀ ਜੋ ਭਾਰਤ-ਗ੍ਰੀਸ



खुशी हुई। हमने कई मुद्दों पर चर्चा की जो भारत-ग्रीष्मांकीयों को मजबूत करेंगे। हमने सतत विकास व बढ़ावा देने के तरीकों पर भी चर्चा की। उन्हें चंद्रयान-3 की सफलता पर भारत को बधाई दी।  
(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विश्वास अकादमी से)

स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में आज झारखण्ड ने ऐतिहासिक शुरूआत की है। देश का पहला हाइड्रोजन इंजन संयंत्र राज्य के जमशेदपुर में स्थापित होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं टाटा मोटर्स और टाटा कमिन्स तथा झारखण्ड सरकार के उद्योग विभाग के अधिकारियों को अनेक-अनेक बधाई देते हुए जोहार करता हूं। आज का दिन सिर्फ झारखण्ड

के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए मील का



(सीएम हेमंत सोरेन के टिवटर अकाउंट से)

स्वागत किया ।

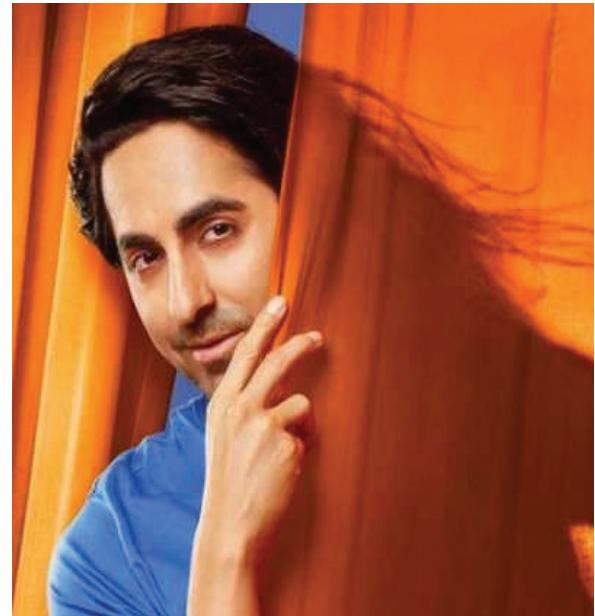
(पूर्व साएम बाबूलाल मराडा के टिवटर अकाउट स)

छेड़लाड़ किए अन्य सभी दीवारों को ध्वस्त होना है। अतः इसका प्रभाव हमारे जीवन के हरेक क्षेत्रों में होना स्वाभाविक है। कुछ अच्छे और कुछ बुरे, जो भी हाँ, यह तय है कि यह हमारी मानसिकता पर निर्भर है कि हम अपने में क्या बदलाव लाते हैं। भारत जैसे देश में वैश्वीकरण के घोर निंदक भी इसके आर्थिक लाभ की प्रशंसा ही करेंगे, जो प्रतिवर्ष करोड़ों लोगों को समृद्धि के मार्ग पर आगे ले जा रहा है। भारत की युवा जनसंख्या, पढ़ने लिखने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि, कंपिटिटिव बेज जहाँ विकसित देशों से उन्नत तकनीक को अपने यहाँ आमंत्रित करता है, वहीं इसके विकास और प्रसार के लिए अपना बाजार उसे एक आधार के रूप में भेट देता है। इससे और अधिक प्रगति होती है तथा उपभोक्ता बाजार और बड़ा होता जाता है। विकसित देशों का स्किल भारत जैसे के विकासशील देशों में स्किल का स्वरूप ले लेता है। भारत का विश्व अर्थव्यवस्था

त इंडोप्रेस करने वाला जा चुका हूँ। प्रधानमंत्री स्वर्गीय नरसिंहा राव के काल में प्रारंभ हुआ था, वह आज भी अच्छी गति में अनवरत चल रहा है। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी पिछले दिनों अमेरिका के दौरे पर वहाँ किन-किन व्यापारिक हस्तियों से मिले या स्वदेश लौटने के बाद किनसे मिले हैं, हमें इसका आभास देता है। परिणाम हमारे सामने है। भारत की आर्थिक दर में निरंतर वृद्धि, विदेशी निवेश में प्रतिवर्ष नया कीर्तमान और भारत का एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उदय होना, इस सबसे संकेत मिलता है कि अल्प समय में ही भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बाला देश बन जाएगा। सकल घरेलू उत्पाद में अगले कुछ वर्षों में सात ट्रिलियन डॉलर का हो जाएगा। अगले 25 से 30 वर्षों तक यह क्रम चलता रहेगा। संभव है कि उसके बाद पर्यावरण की चुनौती और प्रबल होगी तथा पूरा विश्व अधिक जोर से एकजुट होगा। सतत विकास

इक जाति है उपरका विवर होगी। प्रकृति के दोहन को न्यूनता करने की मांग बढ़ेगी और उपभोक्तावाद से आवश्यकतावापर बल दिया जाएगा। 21वीं सदी के उत्तरार्ध में अर्थव्यवस्था को हमनहीं पूरी व्यवस्था को मापने वेष्टने योगदंड होंगे। वैश्वीकरण वेष्ट अगले दौर में योग और प्रिय होगा। अभी योग का प्रसार कहीं न कर शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य वेष्ट उद्देश्य से ही अन्यास होता है। हालांकि एक सोपान और चढ़ेंगे। विश्व के योगेश्वर के सदेश व्यवाहारिक लगेंगे। जहां इन्डियों का शमन रमन का दमन पर जोर दिया गया है। एक ओर विश्व भौतिकतावाद में हास का शुरूआत होगी तो दूसरी ओर उपभोक्तावाद से आवश्यकतावापर की ओर ट्रांसफारमेशन का शुरूआत होगी। शाकाहारित प्रबल होगी, उसके महत्व का लोग समझेंगे। सबसे बड़े गोमांस निर्यात देशों में से एक ब्राजील शाकाहारियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।





**झीम गर्ल में हेमा मालिनी और  
माधुरी दीक्षित को कॉपी करने की  
कोशिश की है: आयुष्मान खुराना**

मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं अपने साथ काम करने वाली और फिल्म इंडस्ट्री में जितनी भी एकट्रेस काम करती हैं, उन सभी को डराऊं उनकी रातों की नीदें उड़ा दूँ। उन्हें इतना परेशान कर दूँ कि देखो अब आयुष्मान भी एक लड़की बनकर आ गया है और वह कितनी बला की खूबसूरती लेकर आया है। मैं तो यह भी चाहता हूँ कि इस साल का बेस्ट एकट्रेस अवार्ड का नॉमिनेशन भी मुझे जाए और अवार्ड भी मुझे मिल जाए तो कुछ इस तरीके से चुटीली बातों के साथ आयुष्मान खुराना मीडिया से मुखातिब हो रहे हैं।

आयुष्मान खुराना की फिल्म 'ड्रीम गर्ल 2' जल्द ही लोगों के सामने आने वाली है। मीडिया से बातचीत करते हुए अपनी फिल्म के बारे में। आयुष्मान ने यूं तो कई सारी बातें बताई। लेकिन साथ ही में कुछ बातों को बहुत संजीदगी से भी मीडिया के सामने रखने की कोशिश की।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए आयुष्मान बताते हैं कि मुझे यह रोल निभाते समय खास दिक्षित तो नहीं हुई कपड़े और मेकअप जेवर यह सब आपको मिल जाता है, लेकिन आप लड़कियों वाली अदाएं कैसे लेकर आएंगे इस बात पर बात ठहर जाती है। लेकिन भला हो मैंने अपने पुराने समय में बहुत ज्यादा थिएटर किया है। रेडियो जॉकी भी रहा हूं। और नाट्यशास्त्र में भी पढ़ा है कि कैसे नौ रस होते हैं तो इन सब को अपना लिया मैंने। और अपने अंदर की जो फैमिलिन एनर्जी है उसको जगाए रखा और इन सब की वजह से मुझे अपना रोल करने में आसानी हुई।

सालों से पुरुष महिला बनते आ रहे हैं लेकिन कई बार ऐसे एक। हंसी मजाक के रूप में दिखाया जाता है। यही रोल अगर आपको बहुत संजीदीगी के साथ करना होता तो क्या आप निभाते? क्या कभी ट्रांसजेंडर का रोल करते।

बिल्कुल, आज भी देश के कई गांव में रामलीला होती है या नाटकों का मंचन होता है तब द्रौपदी या सीता किसी पुरुष पात्र को ही निभाना पड़ता है। हाल ही में फिल्म जो ताली भौ आई है जिसमें एक ट्रांसजेंडर की कहानी को दिखाया गया है। कभी ऐसी भूमिका मुझे मिली तो मुझे यह निभाने में अच्छा लगेगा। लेकिन फिर भी मैं तो यही कहूँगा कि ऐसी भूमिका के लिए किसी ट्रांसजेंडर को ही आगे आना चाहिए और उसे यह भूमिका निभानी चाहिए।

आपकी जिंदगी में ऐसी कोई महिलाएं रही हैं जिनसे आप बहुत गहरे तौर पर जुड़े और शायद उनकी कोई बातें आपने अपने रोल में उपयोग में लाई हों।

मैं अपनी जिंदगी में बहुत सारी स्ट्रांग महिलाओं से घिरा हुआ हूं चाहे वह मेरी पत्नी हो चाहे वह मेरी मैनेजर ही क्यों ना हो। लेकिन फिर भी इस रोल के लिए मैंने रोल मॉडल के तौर पर किसी ऐसे एक्टर का अनुसरण नहीं किया जो एक्टर होने के बाद उसने फीमेल कैरेक्टर किया हो और मैं उन एक्टर की नकल कर लूं। मैंने बजाय इसके असली ड्रीम गर्ल हेमा मालिनी और माधुरी दीक्षित जी को कॉपी करने की कोशिश की है। मुझे लगा वह मेरा बैचमार्क है और मैं इनके जैसे अदायगी लाने की कोशिश करता हूं।

ह लानून ३ घंट बाद मरा दाढ़ी बढ़ गइ ह ता। फिर शावग करा  
और फिर से मेकअप करो।

एक बात समझाने के लिए बताते हैं जैसे शिवजी का अर्धनारीश्वर  
रूप है जिसमें आधे शिव होते हैं और आधी माता पार्वती का वास  
होता है। वह आपने भी निभाया है जिसमें आपको शिव रूप भी

दिखाना है तो वहीं पार्वती रूप भी दिखाना है। कैसे बैलेंस किया?

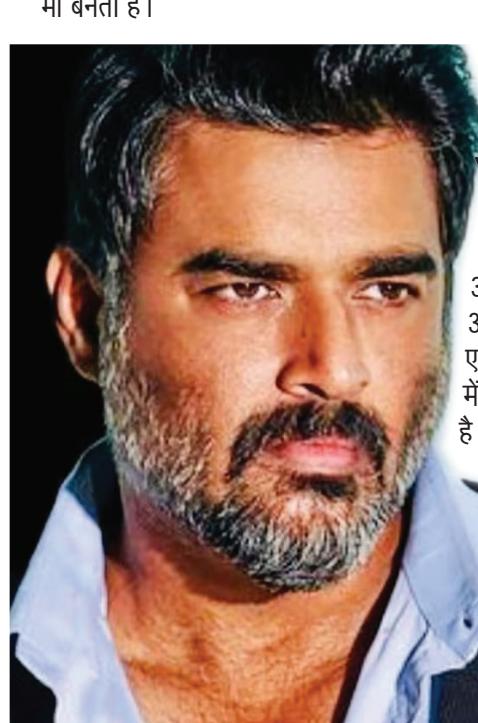
मेरे हिसाब से हर व्यक्ति में चाहे वह मर्द हो या औरत हो, कहीं न कहीं दूसरा एलिमेंट होता है। अगर कोई एक पुरुष है तो उसमें महिला स्वरूप ही होता है तभी तो वह एक धैर्यवान व्यक्ति बन पाता है। वह लोगों को प्यार से जीत पाएगा और अगर यह सारी। खासियत ए खूबियां जो महिलाओं में होती है, एक पुरुष अपने अंदर उसे संजो कर रखेगा। अपनी संवेदनशील फेमिनिन एनर्जी को उतना ही महत्व देगा यह हमारे समाज के लिए बहुत

अच्छा होगा। इससे हम बेहतर समाज बना पाएंगे। वही मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि एक। मेल एनर्जी महिला में भी होती है तभी तो वह सकारात्मक रूप से आगे बढ़ पाते हैं। कई सारी चुनौतियों का सामना कर पाती है। और मेरे इस कैरेक्टर के लिए! यह सम्मेलन एनर्जी को संजोए रखना और उसको उभारना बहुत ही मददगार साबित हुआ है। और शायद इसी तरीके से मैंने अपने पार्वती गाले रूप को भी सम्मान दिया है।



**कृति सेनन ने नेशनल  
फिल्म अवॉर्ड जीतने पर  
जताई खुशी, आलिया  
भट्ट की भी की तारीफ**

69वें नेशनल फिल्म अवॉर्ड्स 2023 के विजेताओं का ऐलान हो गया है। आलिया भट्ट को 'गंगूबाई काटियावडी' और कृति सेनन को 'मिमी' के लिए बेस्ट एक्ट्रेस चुना गया है। इस बड़ी उपलब्धि को हासिल करने के बाद कृति ने सोशल मीडिया पर अपनी खुशी जाहिर की है। कृति सेनन ने अपनी इस कामयाबी पर सभी को धन्यवाद किया है। कृति सेनन ने अपने इंस्टाग्राम पर लिखा, मैं अभी भी इसमें ढूबी हुई हूँ। खुद को पिंच कर रही हूँ कि क्या ये सब सच में हुआ है। मिमी के लिए बेस्ट एक्ट्रेस का नेशनल अवॉर्ड मिला है। ज्यूरी को शुक्रिया, जिन्होंने मेरी परफॉर्मेंस को इस अवॉर्ड के लायक समझा। एक्ट्रेस ने लिखा, यह मेरे लिए पूरी दुनिया है। डीनो मैं आपका धन्यवाद कैसे करूँ... आपने मुझपर इतना विश्वास किया और हमेशा मेरे साथ खड़े रहे और मुझे यह फिल्म दी... इसके लिए मैं आपकी जीवन भर शुक्रगुजार हूँ। लक्ष्मण सर आप हमेशा मुझे कहते थे कि मिमी देखना आपको इस फिल्म के लिए नेशनल अवॉर्ड मिलेगा। मिल गया सर... और यह आपके बिना मुमकिन नहीं था। मॉम, डेड, नूप्स आप सभी मेरी लाइफलाइन हैं। हमेशा चीयरलीडर बनने के लिए थैंक्यू। कृति सेनन ने आलिया भट्ट को भी नेशनल अवॉर्ड जीतने पर बधाई देते हुए कहा बधाई हो आलिया आप ये डिजर्व करती हैं। मैं हमेशा आपके काम की सराहना करती हूँ। मैं इस मोर्मेंट को आपके साथ शेयर करने के लिए बहुत एक्साइटेड हूँ। ये...बिंग हग... चलो सेलिब्रेट करते हैं। आंखे नम हैं और दिल भरा हुआ है। मिमी के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। बत दें कि फिल्म 'मिमी' में कृति सेनन के साथ पंकज त्रिपाठी अहम किरदार में थे। इस फिल्म के लिए पंकज ने भी बेस्ट सहायक अभिनेता का नेशनल अवॉर्ड जीता है। लक्ष्मण उत्तेकर निर्देशित फिल्म 'मिमी' की कहानी एवं युवा लड़की की कहानी है, जो एक अमेरिकन कपल के लिए सरोगेसी



# टेस्ट में अहम भूमिका निभाएंगे माधवन

अभिनेता आर माधवन जल्द ही शशिकांत की आगामी क्रिकेट ड्रामा फिल्म टेस्ट में नयनतारा, सिद्धार्थ और मीरा जैसीन के साथ दिखाई देंगे। हम यह अनुभव करने के लिए इंतजार नहीं कर सकते कि वह अपने अगले किरदार में किन इमोशंस को स्क्रीन पर दर्शाएंगे। अभिनेता की फिल्मोग्राफी बतौर एकटर उनकी अद्भुत क्षमता को दर्शाती है, जो बहुत रोचक और सराहनीय है। रहना है तेरे दिल में से लेकर तनु वेड्स मनू और रंग दे बसती जैसी फिल्मों में माधवन की प्रतिभा न केवल उनके अभिनय कौशल बल्कि अपने को-स्टार के साथ एक उल्लेखनीय केमिस्ट्री बनाने की उनकी क्षमता को बयान करती है। उनके ऑन-स्क्रीन रोमांस वास्तविक और प्रामाणिक लगते हैं, जो अक्सर दर्शकों को उनके द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं में सराबोर कर देते हैं।

फिल्म के गाने, मेलोडियस ट्रॉन्स और अद्भुत गीत के साथ यार और लालसा की भावनाओं को दर्शाते हुए अभी भी दिलों को लुभाते हैं। वर्षों बाद

नौंकों का क्रेंज फैस के बीच देखने को मिलता है, जो फिल्म के आकर्षण और उनके किरदार का एक जीता जागता प्रमाण है। चाहे वह चुना है या रेप्रेन्टेशन में दीपा पर्सन के गाथ तकी सेपांडिक के पिंडारी तो, उन देवदार मार्ग में कंपाए रहने के गाथ गाता कीं।

वह रहना है तर दिल मे म दया मिजा के साथ उनका रामाटक कामस्ट्रा हा, तनु वडस मनु म कगना रनात के साथ साझा का गई आग लगाने वाली केमिस्टी हो या अलाई पेराशे में शालिनी के साथ आकर्षक उपस्थिति हो उनकी केमिस्टी महज

गैर आग लगान पाला कामस्ट्रा हो, या अलाइ पवुये भ शालिना क साथ आकृष्णक उपास्थित हो उनका कामस्ट्रा महण  
प्रदर्शन से उठकर नजर आती है, जो हर कहानी को शानदार बना देती है।

अपने सहयोगी स्टारों के साथ उनकी केमिस्ट्री से प्रेरित होकर उन्होंने आज तक महिला प्रशंसकों और

युवाओं सहित दर्शकों पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं। एक ऑन-स्क्रीन लवर के रूप में उनकी छवि आज ऐसे देखें तो उन्हें देखिये विनाएं देखें तो देखें देखिये।